ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25 | जनवरी - II - 2023 | अंक - 20 | माउण्ट आबू | Rs.-12

राष्ट्रीय सम्मेलन : ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'दया और करुणा के माध्यम से विश्व परिवर्तन के लिए न्यायविदों की भूमिका' त्रिदिवसीय कार्यक्रम

एक चिंतनशील व्यक्ति ही बन सकता है दयावान : जस्टिस मिश्रा

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। भारतीय संविधान दया और करुणा का बहुत सुंदर समन्वय है। जो दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं है। उक्त विचार देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश माननीय दीपक मिश्रा ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। 'दया और करुणा के माध्यम से न्यायविदों की भूमिका' विषय पर जस्टिस मिश्रा ने कहा कि ओम शांति कहते ही हमारे अंदर से शांति के प्रकम्पन उत्पन्न होने लगते हैं। यहाँ पर आना मेरे लिए एक स्पीरिचुअल समन है। क्योंकि मैं इसे ईश्वर का बुलावा मानता हूँ।

धैर्यता ही वास्तव में दया और करूणा का मूलमंत्र है

जस्टिस मिश्रा ने कहा कि करुणा और दया के भाव से हम दूसरों के अधिकारों को समझ सकते हैं। उन्होंने दया और करुणा के भाव से दिए अपने निर्णयों को भी साझा करते हुए कहा कि धैर्यता ही वास्तव में दया और करुणा का मूलमंत्र है। एक चिंतनशील व्यक्ति ही दयावान बन सकता है। एक मूक व्यक्ति भी दया और करुणा की भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। बिना दया और करुणा के मानवीय जीवन नहीं हो सकता।

आत्मिक भाव से होगा शांति और प्रेम का संचार

सुप्रीम कोर्ट से सीनियर एडवोकेट अशोक शर्मा ने कहा कि कानून भी समाज में शांति और प्रेम स्थापित करने के लिए ही बनते हैं। लॉ शब्द भी कहीं न कहीं लव से ही शुरू हुआ है। प्रेम का सच्चा भाव ईश्वर द्वारा प्राप्त होता है, जबकि लॉ मनुष्यों ने बनाए हैं। अगर हम ईश्वर के बनाए नियमों पर चलें तो लॉ बनाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। उन्होंने कहा कि वे काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हैं यहाँ पर सिखाए जाने वाले राजयोग से उनके जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। एडवोकेट शर्मा ने कहा कि जहाँ सबके प्रति समभाव होगा वहाँ स्वतः ही शांति और प्रेम भाव का संचार होगा।

कार्यक्रम में

जस्टिस मिश्रा ने बच्चों के साथ क्रिसमस केक काटा

दिल्ली से स्वरांजलि ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया

इस अवसर पर बच्चों ने नृत्य एवं नाट्य मंचन द्वारा सभी का मनोरंजन किया

आध्यात्मिक शक्ति से न्याय में पारदर्शिता

ब्रह्माकुमारीज़ के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि परमात्मा सबसे बड़ा न्यायाधीश है। लेकिन साथ में दया और करुणा का सागर भी है। आध्यात्मिक शक्ति से ही न्याय में पारदर्शिता आ सकती है। समाज में अच्छाई और बुराई दोनों है। इसलिए दया, करुणा की न्याय में महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही दया और करुणा के भाव जागृत होते हैं। ज्यूरिस्ट विंग की उपाध्यक्ष ब्र.कु. पुष्पा बहन ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य न्यायिक प्रक्रिया को आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा और भी सरल बनाना है। एक स्वच्छ और शक्तिशाली मन ही चीज़ों को अच्छी तरह समझ सकता है। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिसनर्स के अध्यक्ष संदीप अग्रवाल, व दिल्ली से सीनियर एडवोकेट मुकेश आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

न्यायविदों का मूल्यनिष्ठ होना बहुत ज़रूरी

लॉ कॉलेज झालावाड़ के पूर्व प्राचार्य बाबूलाल यादव ने कहा कि आध्यात्मिकता के बगैर विश्व परिवर्तन संभव नहीं है। कानून बनाने से समस्याएं हल नहीं हो सकती। न्यायिक क्षेत्र में परिवर्तन के लिए न्यायविदों का मूल्यनिष्ठ होना ज़रूरी है। न्यायविद प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता बहन ने विंग के द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, भरतपुर से ब्र.कु. प्रवीणा बहन, दिल्ली से सेशन जज राजीव मेहरा, हिमांशु रमन सहित अनेक न्यायविदों ने भाग लिया।

आध्यात्मिक चिंतन से ही बौद्धिक चेतना की जागृति

'विधि व्यवसाय में मूल्यों का सामवेश' विषय पर सम्बोधित करते हुए उत्तराखंड, उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश सर्वेश गुप्ता ने कहा कि मूल्य केवल कहने मात्र से नहीं बल्कि चिंतन से जागृत होते हैं। इसके लिए लम्बे समय तक सत्संग की आवश्यकता है। भौतिकवादी सोच के कारण बुद्धि आज जड़ हो गई है। आध्यात्मिक चिंतन ही बुद्धि की चेतना को जगा सकता है। वास्तव में दुःख और सुख मानव के अपने कर्मों पर निर्भर है। जस्टिस गुप्ता ने कहा कि कानून का असली कार्य सुधारवादी होना चाहिए न कि मात्र सज़ा देना। दया और करुणा का भाव तभी आता है, जब हम ईश्वर से जुड़ते हैं, श्रेष्ठ राह पर चलते हैं। चिंतन ही मनुष्य को बनाता और बिगाड़ता है।

संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी पूरे विश्व में शांति

मुम्बई से बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती, सुखीराम मंडा, माउंट आबू से राजयोगी ब्र.कु. सतीश भाई एवं ब्र.कु. नितिन भाई ने अपने गीतों से सभी को परमात्म मिलन की कराई अनुभूति

कलेक्टर मीना व नगर निगम के पूर्व महापौर कोठारी ने कहा... समाज के हर प्रभाग की सेवा करने वाली यही एकमात्र संस्था

उदयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ मोती मगरी स्कीम सेवाकेंद्र की ओर से नगर निगम के सुखाड़िया रंगमंच पर आयोजित 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' विषयक संगीत संध्या में मुम्बई से बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती एवं सुखीराम मंडा ने परमात्म-स्मृति के सुंदर अनुभूतिप्रद गीत गाकर लोगों को परमात्म-मिलन का अनुभव कराया। साथ में माउंट आबू ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय से आये राजयोगी ब्र.कु. सतीश भाई एवं ब्र.कु. नितिन भाई ने अपने गीतों के द्वारा सभा में परमात्मा से समीपता का अनुभव कराते हुए समा बांध दिया। इस मौके पर कलेक्टर तारा चंद मीना व नगर निगम के पूर्व महापौर चंद्र सिंह कोठारी ने ब्रह्माकुमारीज़ की प्रशंसा करते हुए कहा कि यही एकमात्र ऐसी संस्था है जो समाज के हर प्रभाग की सेवा करती है। अन्य कोई भी ऐसी सेवा नहीं करते, यह बहनें दिल को स्पर्श करने वाली बातें बताती हैं। एनसीसी के ग्रुप कमांडर कर्नल भास्कर ने बताया कि ब्रह्माकुमारी बहनों के संपर्क में आकर मैंने हर परिस्थिति में अपने को समायोजन करके खुश रहना सीखा है, मेरी सहनशीलता बढ़ गई है। नगर निगम के डिप्टी मेयर पारस सिंघवी ने संस्था की सेवाओं को देखकर स्वयं को इस सेवा कार्य में सदा सहयोगी बनने का संकल्प लिया। राजस्थान विद्यापीठ के वाइस चांसलर सारंग देवोत ने संगीत के माध्यम से योग अनुभूति की सराहना की। वंडर सीमेंट के डायरेक्टर पाटीदार जी ने कहा कि यहाँ के सभी भाई-बहनों के शुद्ध वायब्रेशन से मन को बहुत सुकून मिलता है।

कवि व्यास जी ने कहा कि पहले मैं बिका हुआ कवि था। आज से मैं ब्र.कु. कवि बन गया हूँ। सिंधी समाज के अध्यक्ष प्रताप राय चुग ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा दी। सेवाकेंद्र की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रीटा दीदी ने सभी गीतों का आध्यात्मिक अर्थ समझाते हुए ईश्वरीय अनुभूति कराई। कुमारी शर्मिष्ठा, यशस्वी एवं अनुष्का ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। सभी ब्र.कु. भाई एवं बहनों ने इस कार्यक्रम में सहयोग देकर शांति के अलौकिक प्रकंपन फैलाकर विश्व शांति का संदेश दिया।